२०) — पद्मावत की प्रेम पद्धति —

उत्तर — जायसी ने पद्मावत में जिस प्रेम पद्धति का निरूपण किया है वह मूलतः सूफियों की प्रेम-मूलक साधना पद्धति पर आधारित है। सूफी साधक लौकिक प्रेम में भी अलौकिक की झलक देखता है। वह इस प्रकार प्रेममय परमात्मा के नाम-स्मरण और ध्यान में दीवाना बना रहता है। और संसार के समस्त ऐश्वर्य को उस प्रेम रस की मुहब्बत में पाता है —

"बे हिसाब बीयह कि हर अर्स में जलवा आशिकार"

फिर भी यहाँ यह कि स्पष्ट आज तक देखी नहीं जायसी सूफी थे। वे प्रेम पद्धति को ईश्वर-प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन मानते थे। पद्मावत में उन्होंने अनेक स्थलों पर प्रेम की महत्ता का वर्णन किया है जैसे —

"तीनि लोक चौदह खंड सबै परै मोहि सूझि
प्रेम छाँडि नहि लोन किछु, जो देखा मन बूझि।।"

तथा —

"भलेहि प्रेम है कठिन दुहेला। दुइ जग तरा प्रेम जेइ खेला।"

और "प्रेम पंथ जो पहुँचे पारा। बहुरि न मिलै आइ एहि छारा।"

जायसी प्रेम को इतना महत्व देते हैं कि उनके अनुसार जिस व्यक्ति ने इस संसार में आकर प्रेम में तल्लीन होकर द्वारा अपने प्रियतम — ईश्वर की प्राप्ति नहीं की उसका जन्म लेना ही व्यर्थ रहा —

"जो नहिं सीस प्रेम पथ लावा, सो प्रिथिमी महँ काहे आवा"

नागमती रत्नसेन के प्रति अपने प्रेम की

अभिव्यापित करती हुई उस परम प्रेममय की स्थिति को ही साबित दिखती है —
"मैं जानेउँ तुम्ह मोहीं माहाँ। देखौं ताकि तौ हौ सब पाहाँ॥"

"तुम्ह सौं जग कोउ न जीता, हारे बररुचि भोज।
पहिलै आपु जो खोवै, करै तुम्हार सो खोज॥"

पद्मावती भी उसी परम प्रेममय की प्रतीक है —
"जग कोई दीठि न आवै, आछहि नैन अकास।
जोगी जती संन्यासी, तप साधहिं तेहि आस॥"

जायसी स्थान-स्थान पर सर्वत्र प्रेमास्पद को ही उस परम प्रेममय ब्रह्म का प्रतीक बनाते चले गए हैं। नागमती के लिए रतनसेन ब्रह्म है। रत्नसेन सर्वव्यापी है और रत्नसेन के लिए पद्मावती तथा अंत में चल कर पद्मावती के लिए रत्नसेन ब्रह्म का प्रतीक बन जाता है। पद्मावत की रचना में जायसी का मूल उद्देश्य प्रेम की ~~महत्व~~ महत्ता का ही चित्रण करना था। उन्होंने इस महत्ता का चित्रण लौकिक प्रेम कथा के माध्यम द्वारा किया था और ऐसा करते समय उन्होंने प्रचलित रूढ़ियों का प्रचुरता के साथ प्रयोग करके अपनी प्रेम कथा को पर्याप्त प्रधान किया। इसलिए हमें प्रेम पद्धति का विवेचन करने से पूर्व जायसी द्वारा प्रयुक्त प्रेम कथा के विधानों का परिचय प्राप्त करना है।

<u>प्रेम कथा के विधान</u> →

प्राचीन प्रेमाख्यानक काव्यों में प्रेम कथा के अनेक विधानों के दर्शन होते हैं। अधिकांश प्रेम कथाओं में नायक के हृदय में प्रेम का अंकुर उत्पन्न करने का कार्य प्रायः पक्षियों द्वारा किया जा रहा है।

नल दमयन्ती की कथा में यह कार्य राजहंस ने किया था परन्तु साधारणतः तोता ही यह कार्य को करता रहा है। 'पृथ्वीराज रासो' में तोता इस कार्य को करता है। जायसी ने भी हीरामन तोते को ही अपना माध्यम बनाया है।

प्रेम कथाओं में दूसरा विधान होता है — प्रेमी-प्रेमिका का प्रथम मिलन। कहीं यह मिलन आकस्मिक होता है और कहीं सायास। तुलसी ने जानकी की पुष्पवाटिका में राम और सीता का आकस्मिक प्रथम मिलन दिखाया है परन्तु जायसी ने सायास और पूर्व निश्चित योजनानुसार शिव मंडप में रत्नसेन और पद्मावती का प्रथम मिलन दिखाया है।
अधिकांश भारतीय प्रेम कथाओं में नायक के प्रेम की परीक्षा लेने का भी विधान प्रचलित रहा है। प्राचीन कथाओं में प्रेम का अधिक उत्कर्ष दिखाने के लिए विवाह या मिलन के उपरान्त प्रेमी प्रेमिका को वियुक्त करवा कर पुनः उन्हें मिला देने का विधान रहा है। अन्य विधानों में युक्तियों का प्रयोग, सपत्नियों का विवाद, पुत्र जन्म आदि का वर्णन होता है। जायसी ने इन सभी प्रसंगों के प्रति पूर्ण सतर्कता दिखायी है।

डॉ० जयदेव के अनुसार — भारतीय प्रकार की प्रेम कथाओं में तीन और आवश्यक विधान हैं —
1. षट्ऋतु वर्णन 2. नख शिख वर्णन
3. बारह मासा वर्णन। जायसी ने इन तीनों विधानों का भी पूर्ण उपयोग किया है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है। जायसी ने अपनी प्रेम कथा में अन्य पूर्ववर्ती एवं समकालीन प्रचलित प्रेम कथाओं से प्रयुक्त आख्यानक रूढ़ियों को अपना कर - पद्मावत - का निर्माण किया है। अतः पद्मावत की कथा को एक सफल-प्रेम कहानी माना जा सकता है।

प्रेम पद्धति → शुक्ल जी ने पद्मावत की प्रेम पद्धति का निरूपण करते हुए भारतीय साहित्य में प्रचलित चार प्रमुख प्रेम प्रणालियों का परिचय दिया है जो इस प्रकार है—

1. रामायण आदि महाकाव्यों की वह प्रेम जिसका स्फुरण विवाह के उपरान्त तथा उत्कर्ष जीवन की विकट परिस्थितियों में होता है।
2. नायक-नायिका एक दूसरे को देख मोहित हो जाते हैं और फिर उनमें प्रेम की वृद्धि होती है। इस का अन्त विवाह में होता है। प्रायः नायक की ओर से अधिक दिखाया जाता है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् का प्रेम ऐसा ही है।
3. यह राजाओं के अन्तःपुर का प्रेम होता है जिनमें सपत्नियों के द्वेष, विदूषक आदि के हास्य परिहास और राजाओं की लम्पटता का वर्णन अधिक होता है। नायक बाहर न जाकर घर में ही कुछ करता दिखता है। रत्नावली, कर्पूर-मंजरी आदि नाटिकाओं में इसी प्रकार के प्रेम का प्रदर्शन है।
4. यह प्रेम गुण श्रवण, चित्र दर्शन, स्वप्न दर्शन - आदि से घर-बैठे-बिठाए हो जाता है। उषा - अनिरुद्ध का प्रेम इसी प्रकार का है।

Scanned with CamScanner

पद्मावत में जायसी द्वारा वर्णित प्रेम-पीर प्रकार का है। जायसी ने पद्मावत में मुख्यतः दाम्पत्य प्रेम का ही उत्कर्ष दिखाया है। पद्मावती पक्ष में पूर्वराग का उदय, पद्मावती सुआ और राघव से गुण श्रवण करता है वहीं कवि कहते हैं—

"सुनि कै बात जरी असकाया। मन गा मयन सो हिय में माया॥"

आगे चलकर वसंत खंड में जोगी-दर्शन के पश्चात पद्मावती के प्रेम की प्रतीति हो जाती है। "पद्मावति जस सुना बखानू। सहस करा देखेसि तस भानू"॥

पद्मावती के इस प्रेम का विकास गन्धर्वसेन-मंत्री-खंड में जाकर होता है। यहाँ पर प्रेम मिलन न होकर दोनों पक्षों में सम हो जाता है। रत्नसेन पद्मावती के रूप सुनते ही योगी अलख कोमल जिज्ञासा है।

जायसी का यह प्रेम मार्ग ऊपर से देखने पर तो सरल सा प्रतीत होता है परन्तु इसे अनायास ही नहीं प्राप्त किया जा सकता। उसके लिए अनेक साधनों की आवश्यकता पड़ती है। गुरु इसका मूल आधार होता है। गुरु-कृपा से ही शिष्य के हृदय में प्रेम का उदय होता है—

"गुरु विरह चिनगी जो मेला, जो सुलगाइ लेइ सो चेला"।

इस प्रकार, जायसी ने पद्मावत में अपनी प्रेम पद्धति का सरल मार्मिक निरूपण किया है जो अपार सुलभता हुआ और विद्यार्थियों के आकर्षण का कारण बना॥

Scanned with CamScanner

वर्णित एक सिद्धान्त सरल मार्ग की जिस पर, चलकर उस परम प्रेमतत्व को प्राप्त किया जा सकता है। लौकिक रूप से यह प्रेम मार्ग सरल प्रतीत होता है परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से यह सर्वसाधारण के लिए सुलभ नहीं होता।

जायसी प्रेम के अमर चितेरे हैं। उन्होंने प्रेम के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का चित्रण चित्रवत किया है।।

The End